14 बाघ आया उस रात

“वो इधर से निकला
उधर चला गया ऽऽ”
वो आँखें फैलाकर
बतला रहा था–
“हाँ बाबा, बाघ आया उस रात,
आप रात को बाहर न निकलो!
जाने कब बाघ फिर से आ जाए!”
“हाँ, वो ही ी ी! वो ही जो
उस झरने के पास रहता है
वहाँ अपन दिन के वक्त
गए थे न एक रोज़?
बाघ उधर ही तो रहता है
बाबा, उसके दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है ...”
दूसरा बालक बोला–
“बाघ कहीं काम नहीं करता
न किसी दफ़्तर में
न कॉलेज में ऽऽ”
छोटू बोला–
“स्कूल में भी नहीं ...”
पाँच–साला बेटू ने
हमें फिर से आगाह किया
“अब रात को बाहर होकर बाथरूम न जाना!”

नागार्जुन

बात-बात में

"वो इधर से निकला, उधर चला गया"

(क) यह बात कौन किसे बता रहा होगा?

(ख) तुम्हें यह उत्तर कविता की किन पंक्तियों से पता चला?

ख़बर तेंदुए की

(क) कक्षा 2 की रिमझिम में अखबार में छपा एक समाचार दिया गया है। साथ में उस समाचार के आधार पर लिखी एक कहानी भी दी गई है। उसे एक बार फिर से पढ़ो।

(ख) अब 'बाघ आया उस रात' कविता के आधार पर एक 'समाचार' लिखो।

(ग) तेंदुए और बाघ में क्या अंतर है? पता करो। इस काम के लिए तुम बड़ों से बातचीत भी कर सकते हो।

उस रात

इस कविता में एक ऐसी रात की बात की गई है जिस रात को कुछ अनोखी घटना घटी थी।

(क) उस रात को कौन-सी अनूठी बात हुई थी?

(ख) तुम्हारे विचार से क्या सचमुच यह बात अनूठी है? क्यों?

(ग) उस रात को और क्या-क्या हुआ होगा? अपने साथियों से बातचीत करके लिखो।

बाघ के काम

"बाघ कहीं काम नहीं करता, न किसी दफ़्तर में, न कॉलेज में"

बाघ दिन भर क्या-क्या करता होगा? कहाँ-कहाँ जाता होगा? अपने साथियों के साथ मिलकर जानकारी एकत्रित करो। फिर चर्चा करके उस पर एक चित्रात्मक पुस्तक तैयार करो। इसे तुम अपने पुस्तकालय में भी रख सकते हो।

आँखें फैलाकर

वो इधर से निकला उधर चला गया

वो *आँखें फैलाकर* बतला रहा था।

नीचे आँख से जुड़े कुछ और मुहावरे दिए गए हैं, वाक्यों में इनका इस्तेमाल करो।

आँख लगना	आँख दिखाना
आँख मूँदना	आँख बचाना
आँखें भर आना	सिर-आँखों पर बैठाना

शब्दों की दुनिया

(क) *पाँच साला बेटू ने हमें फिर से आगाह किया।* 'आगाह किया' का मतलब क्या हो सकता है?

- सचेत किया ☐
- मनोरंजन किया ☐
- बताया ☐
- समझाया ☐

(ख) कविता में इनमें से कौन-सा भाव झलकता है?

(ग) किन-किन पंक्तियों/शब्दों से ये भाव व्यक्त हो रहे हैं?

- आश्चर्य
- डर
- अविश्वास

(घ) जब हम कविता के ज़रिए कोई बात कहते हैं तो आम तौर पर शब्दों के क्रम को बदल देते हैं।

- जैसे कविता का शीर्षक "बाघ आया उस रात" गद्य में "उस रात बाघ आया" होगा। ऐसा क्यों किया जाता होगा?
- इस किताब की दूसरी कविताएँ भी पढ़ो और शब्दों के क्रम में आए बदलाव पर गौर करो। ऐसे ही कुछ वाक्यों की सूची भी बनाओ।
- क्या शब्दों के क्रम में बदलाव अखबार की खबरों में भी आता है? नीचे बने कोलाज को देखो और बताओ।

बाइक पर जाना स्कूल, पुलिस बोली - नहीं माकूल

नींद में छिपा सेहत का राज

जहरीली हवा की चपेट में आ रही है राजधानी दिल्ली

पापा के नंबर पर बच्चे की पढ़ाई

किस तरह के बच्चे होते हैं अच्छे

पहले ड्राइवर हो गिरफ्तार, फिर छोड़ेंगे बस : हाईकोर्ट

बच्चों ने बिखेरे कल्पना के रंग

आखिर कौन था वह बाहरी आदमी?

ड्राइवर्स के इशारों पर नाचीं कारें

चमकी फिल्म की किस्मत

आसमान से जमीन पर गिरीं सब्जियां

तिपहियों के पीछे लगेंगे विज्ञापन

भारतीय इतिहास और संस्कृति पर तस्वीरें बनाएंगे रूसी बच्चे

बच्चों ने निकाली पल्स पोलियो रैली

इस बार पसीने छुड़ा रही है दिल्ली की सर्दी

स्वीपर कर रहे डाक्टर का काम

दक्षिण दिल्ली में पेयजल संकट से दिनभर लोग रहे त्रस्त

अठारह घंटे तक की देरी से चल रही हैं रेलगाड़ियां

कुतुबमीनार से भी ऊंचा बनेगा नगर निगम का सिविक सेंटर

पटाखों ने इस बार घोला आसमां में दोगुना जहर

इस बार कठिन होगा बच्चों को रिझाना

कोहरे के असर से मंद पड़ीं ट्रेन व बसें

एशियाई शेर के लिए मीठी गोलियाँ

नई दिल्ली: घाघस एक एशियाई शेर चिकित्सा की दुनिया का एक जीता जागता चमत्कार बन गया। बचने की कोई उम्मीद न होने पर भी आज वह ज़िंदा है और पहले की तरह गरजता है।

घाघस को अक्टूबर 2004 को दिल्ली के चिड़ियाघर में लाया गया था। वह चिड़ियाघर के माहौल में अच्छी तरह से रम गया था। 15 मार्च को उसने रोज़ की तरह अपना खाना पूरा नहीं खाया। चिड़ियाघर के डॉक्टरों ने इस बात पर ध्यान देते हुए उसे तीन दिन तक लगातार सुई लगाई। पर इससे उसे कोई फ़ायदा न हुआ, अब तो उसने खाना एकदम छोड़ ही दिया था और मुँह से लार भी बहने लगी थी।

घाघस की गिरती हुई हालत देख उसके खून के नमूने जाँच के लिए भेजे गए। हालाँकि इस बीच घाघस ने थोड़ा-बहुत तो खाना शुरू कर ही दिया था पर उसकी हालत ठीक नहीं कही जा सकती थी।

वह अपने पिछले पैरों से लँगड़ाने भी लगा था और ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। दिल्ली के चिड़ियाघर के निदेशक डी.एन. सिंह ने बताया "एक महीने बाद तो हालत यह हो गई कि घाघस अपने शरीर का पिछला हिस्सा उठाने में असमर्थ हो गया। हमने उसे नियमित रूप से दिए जाने वाले माँस के स्थान पर मटन और चिकन खाने के लिए दिया। खाने में किए गए बदलाव का असर हुआ और घाघस ने 70-80 प्रतिशत तक खाना खाया जो कि एक अच्छा संकेत था। हालाँकि उसकी हालत में कोई सुधार नज़र नहीं आ रहा था।

घाघस को इलाज के लिए दूसरे विशेष चिकित्सकीय पिंजरे में रखा गया। उसके इलाज में कोई कोताही नहीं बरती जा रही थी, उसके शरीर की भाप से सिंकाई भी की जाती थी और अब वह भोजन भी अच्छी तरह से लेने लग गया था पर हालत उसकी वैसी ही बनी हुई थी। चिड़ियाघर के सभी लोग चिंतित हो गए।

हालत ऐसी हो गई थी कि अब दिन गिनने के अलावा कोई चारा न था

घाघस की यह दशा देखकर हमने गुजरात के वन्यजीव विशेषज्ञों से यह सोचकर सलाह लेने का निर्णय किया कि सिंह भारत में सिर्फ़ गुजरात के गिर जंगलों में पाए जाते हैं, शायद वे ही कोई राह सुझा सकें।" सिंह ने आगे बताया गुजरात के प्रमुख वन्यजीव संरक्षक ने उन्हें आणंद के डॉक्टर आर.जी. जानी से संपर्क करने का सुझाव दिया।

घाघस के इलाज की रिपोर्ट देखने के बाद डॉ जानी ने उसे होम्योपैथी दवाइयाँ देने की सलाह दी। होम्योपैथी इलाज शुरू होने के दो माह के भीतर ही घाघस की हालत सुधरनी शुरू हो गई और अब वह अपने चारों पैरों पर खड़ा हो पा रहा था। यह बात है 3 अगस्त की यानी कि पूरे छह माह वह तकलीफ़ में रहा। बीमारी की वजह से वह बहुत कमज़ोर हो गया है पर हालात में अभी सुधार है।